Sarup Book

मध्य प्रदेश

की लोकसंस्कृति का प्रादेशिक भूगोल

डॉ. कमलेश मिश्र • डॉ. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

मध्यप्रदेश
की लोकसंस्कृति का प्रादेशिक भूगोल

Regional Geography of the Folk Culture of Madhya Pradesh

सम्पादक
डॉ. कमलेश मिश्र
उपसम्पादक
डॉ. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

सरूप बुक पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड
नई दिल्ली-110 002

प्रकाशक
सरूप बुक पब्लिशर्स प्राईवेट लिमिटेड
4740/23, अंसारी रोड, दरिया गंज
नई दिल्ली-110002
फोन : 23281029, 23244664
ई-मेल : sarupandsonsin@hotmail.com

मध्यप्रदेश की लोकसंस्कृति का प्रादेशिक भूगोल

© *सुरक्षित*

प्रथम संस्करण-2022

ISBN: 978-93-5208-194-3

शब्द संयोजक : आदिल प्रिंटोग्राफिक्स

अनुक्रमणिका

	आमुख	डॉ. यशवन्त गोविन्द जोशी	*v*
	प्राक्कथन	डॉ. संतोष कुमार शुक्ल	*ix*
	संपादकीय		*xiii*
	भौगोलिक दृष्टि से लोकसंस्कृति के विचार का बोध		*xv*
	लेखक परिचय		*xvii*
	मानचित्र		*xix*
	छायाचित्र		*xxi*
1.	मध्यप्रदेश के लोक संस्कृति प्रदेश	डॉ. शिवकुमार तिवारी	3
2.	बुन्देली लोक संस्कृति प्रदेश	डॉ. कमलेश मिश्र	67
3.	बघेली लोक संस्कृति प्रदेश	प्रो. रागस्वरुप	111
4.	गिर्द (ग्वालियर) लोक संस्कृति प्रदेश	डॉ. ब्रह्मा नंद त्रिपाठी	141
5.	मालवा लोक संस्कृति प्रदेश	डॉ. ब्रह्मा नंद त्रिपाठी एवं डॉ. सीमा द्विवेदी	157
6.	निमाड़ी लोक संस्कृति प्रदेश	डॉ. अर्चना नामदेव एवं डॉ. प्रकाश मिश्र	191
7.	पश्चिमी पहाड़ी लोक संस्कृति प्रदेश	डॉ. ममता साहू	207
8.	ऊपरी नर्मदा घाटी (गोंडवाना) लोक संस्कृति प्रदेश	डॉ. शिवकुमार तिवारी	235
9.	सतपुड़ा पर्वत (गोंडवाना/खानदेश) लोक संस्कृति प्रदेश	डॉ. एस.पी. अवस्थी	239
परिशिष्ट	मध्यप्रदेश शासन में संस्कृति से संबंधित प्रशासनिक तंत्र		283

(11)

आजादी @75

क्रांतिकारियों की शौर्यगाथा

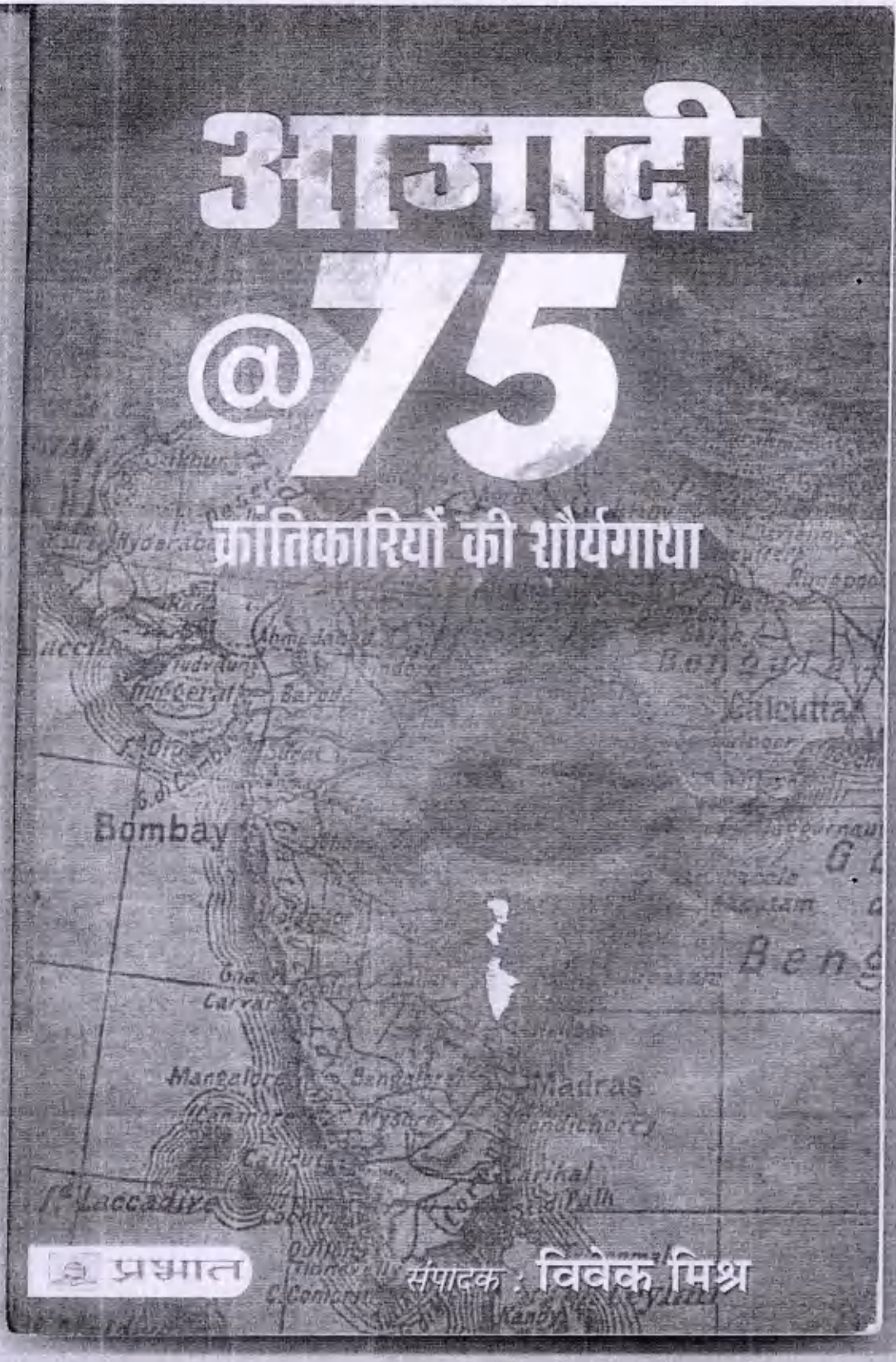

प्रभात

संपादक : विवेक मिश्र

ISBN — 978-93-5521-184-2

प्रकाशक

प्रभात पेपरबैक्स

प्रभात प्रकाशन प्रा. लि. का उपक्रम

4/19 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

फोन : 23289777 • हेल्पलाइन नं. : 7827007777

इ-मेल : prabhatbooks@gmail.com ❖ वेब ठिकाना : www.prabhatbooks.com

संस्करण

प्रथम, 2022

सर्वाधिकार

सुरक्षित

मूल्य

पाँच सौ रुपए

मुद्रक

आर-टेक ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

★

AZADI @ 75 : KRANTIKARIYON KI SHAURYAGATHA

Ed. Shri Vivek Mishra

Published by **PRABHAT PAPERBACKS**

An Imprint of Prabhat Prakashan Pvt. Ltd.

4/19 Asaf Ali Road, New Delhi-110002

ISBN 978-93-5521-184-2

₹ 500.00

स्वर्गीय **श्री जयदयाल डालमिया**
को समर्पित

भारतीय स्वाधीनता संग्राम के दौरान भारत के औद्योगिक विकास में मुख्य भूमिका निभाने वाले डालमिया समूह के सह-संस्थापक स्वर्गीय **श्री जयदयाल डालमिया**, जिन्होंने अर्थ (धन) का उपयोग सदैव समाज की उन्नति एवं कल्याण के लिए किया। विभाजन के दौरान शरणार्थियों को पुनर्वासित करने में अहम भूमिका निभाई। इनके द्वारा गौ-हत्या विरोधी आंदोलन एवं भारतीय संस्कृति के परिचायक प्राचीन मंदिरों का जीर्णोद्धार भी करवाया गया।

अपने पेशे से सेवानिवृत्ति की घोषणा के पश्चात् इन्होंने दो दशकों तक श्रीकृष्ण जन्मस्थान सेवा संस्थान (मथुरा) के प्रबंध न्यासी का दायित्व निर्वहन किया। सनातन परंपरा के उत्थान के लिए विभिन्न धार्मिक और धर्मार्थ ट्रस्टों की स्थापना की। इनके द्वारा सन् 1971 में प्रकाशित—'A Review of beef in ancient India' जैसी पुस्तकों का लेखन-कार्य भी किया गया।

67. रानी गाइदिन्ल्यू —वीरेंद्र परमार 390
68. शांति घोष —आरती शर्मा 396
69. शहीद राजनारायण मिश्र —विवेक मिश्र 400
70. रामफल मंडल —बिनोद बिहारी 403
71. कनकलता बरूआ —डॉ. निशा नंदिनी भारतीय 408
72. हेमू कालाणी —डॉ. नेहा कल्याणी 411
73. भागीरथ सिलावट —डॉ. संध्या सिलावट 415
74. थेंगफाखरी —पूजा मिश्रा 422
75. गोंड राजा शंकर शाह एवं रघुनाथ शाह —डॉ. नुपूर निखिल देशकर 427

1

तिलका माँझी

"चीखती घटनाएँ तो इतिहास में बड़ी सहजता से जगह पा लेती हैं, मगर खामोश घटनाएँ उतनी ही आसानी से दरनजर भी कर दी जाती हैं, जबकि कभी-कभी खामोश घटनाएँ चीखती घटनाओं से ज्यादा वजनदार साबित होती हैं।"

यह कथन है भागलपुर निवासी डॉ. राजेंद्र प्रसाद सिंह का, जिन्होंने सदियों से चली आ रही कथाओं का सच बिहार के उस प्रसिद्ध शहर में, उसके इतिहास और भूगोल को साथ कर, खोजने की कोशिश की है और एक सीमा तक सफल भी रहे हैं। गौर करें तो वर्तमान परिवेश में स्वयं के जीवित होने का भी प्रमाण देना पड़ता है, फिर वे तो शताधिक वर्षों से दफन घटनाएँ हैं, उनकी सत्यता पर प्रश्नचिह्न तो लगना ही चाहिए।

ऐसे ही एक प्रश्न को उछाला गया है भागलपुर के भूगोल पर। यों तो भागलपुर के भूगोल पर कई स्थल ऐसे हैं, जिनके अतीत ने वर्तमान का रूप ग्रहण कर लिया है। यहाँ प्रसंग आता है भागलपुर के एक पुराने हाट का, जिसका नाम 'तिलका माँझी हाट' है। कुछ ही दूरी पर 'तिलका माँझी मोहल्ला' है। वहीं 'तिलका माँझी चौक' है। इसी चौक पर एक गोलंबर है, जहाँ एक आदिवासी की विशाल प्रस्तर प्रतिमा स्थापित है—धनुष पर तीर चढ़ाए''संधानमुद्रा में। इस निर्जीव प्रतिमा के हाव-भाव देखकर उसके क्रांतिकारी मिजाज का एहसास हो जाता है। आते-जाते एकबारगी ध्यान खिंच जाता है बरबस, सवाल कुलबुलाने लगता है कि किसे लक्ष्य कर तीर छोड़ना चाहती है यह मूर्ति? जवाब प्रतिमा-स्थल पर लगी प्लेट पर अंकित वाक्य के रूप में है—

'अपने विष-बुझे तीर से क्रूर कलेक्टर ऑगस्टस क्लीवलैंड की हत्या कर क्रांति का बीजारोपण किया।'

सजीव प्रतीत होती यह प्रस्तर-प्रतिमा तिलका माँझी की है। यहीं किनारे खड़े बरगद के पेड़ से लटकाकर उन्हें फाँसी दी गई थी। उस वृद्ध बरगद के नष्ट हो जाने पर बरगद

संपादकीय

स्वतंत्रता की बलि वेदी पर.....

" चिता भस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो
जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारि पशुपतिः
कपाली भूतेशो भजति जगदशैकपदवीं
भवानि त्वत्पाणि ग्रहण परिपाटी फलमिदम्।।"

(श्री दुर्गासप्तशती)

अर्थात् – जो अपने अंगों में चिताभस्म लपेटे हैं, जिनका विष ही भोजन है, जो दिगम्बर है, जिनके ललाट पर जटाएँ हैं। जो कण्ठ में नागराज को हार के रूप में धारण किये हैं। जिनके हाथों में कपाल का भिक्षा पात्र है ऐसे भूतनाथ, पशुपति इस लिए जगदीश्वर हैं, क्योंकि उन्होने भवानी, जगदीश्वरी आपसे पाणिग्रहण (विवाह) किया है, अर्थात् पराम्बा परमेश्वरी जगतदात्रि आपसे शिव का विवाह होने के कारण शिव विश्वेश्वर हुए।

भारत की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक प्रमाणिकता वैज्ञानिक रुप से भी स्त्री के सामर्थ्य को स्वीकार करती है। जहाँ शिव, शक्ति से पृथक होते ही शव तुल्य हो जाते हैं, अतः देवादिदेव ने अपनी पूर्णता को अर्धनारीश्वर के रुप में स्वीकार किया।

शक्ति चाहे तन की हो, धन की हो या बुद्धि की, युगों–युगों से पूजन सदैव आदि शक्तियों का महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती के रुप में किया जाता है।

भारत भूमि में प्रत्येक जीव के स्पंदन के लिए प्रकृति को सर्वत्र मातृभाव से देखा जाता है। जन्मभूमि माता है, पवित्र नदियाँ मैया हैं, गाय गौमाता है, तुलसी.... माई है – यहाँ तक कि कोटि–कोटि कण्ठ वंदेमातरम् इस पवित्र मंत्रोच्चारण से भारत माँ को पूजते हैं। इस शस्य श्यामल धरा के अखण्ड स्वरूप को जब–जब विदेशी आक्रांताओं द्वारा खण्ड–खण्ड करने का प्रयास किया गया तब–तब इस पावन धरा की गोद में जन्मी मातृशक्ति पूर्ण चेतना के साथ अपने संपूर्ण सामर्थ्य से आगे आई और इसका प्रतिकार किया, प्रतिशोध लिया।

विश्वविद्यालय, एथेंस के रचनात्मक लेखन विभाग में सहायक अध्यापक अरुणि कश्यप का कहना है कि थेंगफाखरी का नाम, कनकलता बरुआ और मुला गाभोरू की श्रेणी में अपना स्थान बना चुका है और वह दिन दूर नहीं जब थेंगफाखरी को भी झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की तरह ही याद किया जाएगा।

संदर्भ सूची—

1. Kashyap Aruni, The Bronze Sword Of Thengphakhri Tehsildaar, Zubaan Publication
2. Lerner Gerda, The Creation of Patriarchy, Oxford University Press, Newyork
3. कुमार राधा, स्त्री संघर्ष का इतिहास, अनुवाद : रमा शंकर सिंह 'दिव्यदृष्टि', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
4. https://www.bodolandobserver.wordpress.com
5. https://www.femenismindia.com, Article by Deachen Angmo

—पूजा मिश्रा
शोधार्थी, हिंदी विभाग
प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय, कलकत्ता
ई-मेल : pooja.shukla2607@gmail.com

□

75

गोंड राजा शंकर शाह एवं रघुनाथ शाह

हमारे पूर्वज सदैव से एकता का संदेश देते रहे। जनजाति समाज भी इन्हीं में से एक है। गोंड सम्राज्ञी रानी दुर्गावती, बिरसा मुंडा, टंट्या भील या गोंड वंश के वंशज शंकर शाह, रघुनाथ शाह इन सभी ने अपने राष्ट्र की एकता-अखंडता को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए अपने प्राणों की आहुतियाँ दे दीं।

भारत माँ के पैरों में पड़ी परतंत्रता की बेड़ियों को काटने के लिए भारत का प्रत्येक जनमानस अपने-अपने सामर्थ्य से प्रयास करता रहा। इसी श्रृंखला में मध्य प्रदेश के जबलपुर जिले के ग्राम मंडला साम्राज्य के वंशज राजा शंकर शाह, राजा रघुनाथ शाह आते हैं। यह साम्राज्य हजारों वर्ष प्राचीन था, जिसकी वंशबेल इतिहास के पन्नों में आज भी संरक्षित है। गोंड साम्राज्य का अभ्युदय 358 ईस्वी में हुआ था। आपकी वंश परंपरा महाभारतकालीन एकलव्य से जुड़ी हुई मानी जाती है। लेखों में प्रमाण है कि यदुराव मरावीजी को भगवान् राम-जानकी का आशीर्वाद मिला। उसके पश्चात् इन्होंने नागवंशी कन्या से विवाह कर अपनी वंश परंपरा को आगे बढ़ाया। आपकी 48वीं पीढ़ी में संग्राम शाह का जन्म हुआ। जिन्होंने गढ़ा मंडला साम्राज्य का विस्तार किया। 52 गढ़ 48 परगनों की स्थापना आपके शासनकाल में ही हुई। आपको भगवान् भैरव बाबा की सिद्धियाँ प्राप्त थीं, जिनके प्रताप से आपने बाजना मठ की स्थापना की। संग्राम शाह के 2 पुत्र थे। दलपत शाही या दलपत शाह मरावी और चंद्र शाह मरावी। दलपत शाह ज्येष्ठ पुत्र होने के साथ-साथ नेतृत्व क्षमता में कुशल थे, अतः संग्राम शाह के पश्चात् राजपाट की बागडोर दलपत शाह के मजबूत हाथों में आ गई, किंतु दलपत शाह की मृत्यु के पश्चात् उनके अवयस्क पुत्र 'वीर नारायण' का राज्याभिषेक किया गया और दलपत शाह की पत्नी महारानी दुर्गावती ने अपने पुत्र वीर नारायण की संरक्षिका बनकर राजपाट चलाना प्रारंभ कर दिया। लगभग साढ़े 16 वर्ष

कुशल शासन चलाते हुए 24 जून, 1564 को आदिल खाँ और उनके देवर चंद्र शाह के षड्यंत्र से रानी परास्त होकर वीरगति को प्राप्त हुई। यहाँ से सत्ता को पाने का स्वार्थी संघर्ष प्रारंभ हो गया। चंद्र शाह ने मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली। उनकी 11वीं पीढ़ी में शंकर शाह का जन्म हुआ। आपके पिता सुमेर (सुमेदशाह) शाह (1790) के पश्चात् इस वंश के राजा नाममात्र के शासक बनकर रह गए। प्रजाजन आज भी अपने राजा को अपने पूर्वजों की भाँति ही मान-सम्मान देती थी।

शंकर शाह-रघुनाथ शाह की राज्य व्यवस्था

शंकर शाह-रघुनाथ शाहजी का जन्म मंडला के किले में हुआ था। जिसका निर्माण उनके पूर्वज नरहरि शाह अर्थात् नरेंद्र शाह ने 1698 में कराया था। इस किले का वैशिष्ट्य यही था कि यह किला सुरक्षा की दृष्टि से तीन ओर माँ नर्मदाजी की अथाह जलराशि से घिरा हुआ था तो एक ओर से ऊँची-ऊँची प्राचीर से। नरहरि शाह और सुमेर (सुमेद) शाह आपस में चचेरे भाई थे। दोनों में गोंड साम्राज्य की सत्ता को लेकर संघर्ष चल रहा था। सुमेर शाह को सागर के मराठा राजा का संरक्षण था तो नरहरि शाह को नागपुर के भोंसले राजा का संरक्षण, किंतु 1818 में मंडला का गोंड साम्राज्य अंग्रेजों के संरक्षण में आ गया।

शंकर शाह अपने पूर्वजों की भाँति स्वतंत्र राजा नहीं रहे, अब इनके पास गढ़ा पुरवा और आसपास के कुछ गाँव की जागीर मिलाकर कुल 947 बीघा जमीन ही थी और शेष अंग्रेजों ने कूटनीति से हथियाकर अपने अधिकार क्षेत्र में ले ली थी। इन्हें मात्र कुछ रुपए की पेंशन प्राप्त होती थी। शंकर शाह का विवाह रानी फूलकुँवर से हुआ था। इनका एक पुत्र था—रघुनाथ शाह। रघुनाथ शाह का विवाह रानी मनकुँवर से हुआ था। आपका भी एक पुत्र था, जिसका नाम था—लक्ष्मण शाह, जब शंकर शाह और रघुनाथ शाह अपने देश के लिए शहीद हुए, तब शंकर शाह की आयु 70 वर्ष और रघुनाथ शाह की आयु 32 वर्ष थी। इन पिता-पुत्र के बलिदान के पश्चात् सास-बहू ने साथ मिलकर अंग्रेजों से लोहा लिया और वे भी वीरगति को प्राप्त हुईं।

अंग्रेजों से विद्रोह

लॉर्ड डलहौजी की हड़प नीति के अंतर्गत अंग्रेजों ने भारत की ऐसी कई छोटी-बड़ी रियासतों का अपने शासन में विलय कर लिया था। दूसरा गाय एवं सूअर की चर्बीवाले कारतूसों की घटना ने आम भारतीयों को एक कर दिया था। राजा शंकर शाह और रघुनाथ शाह यह सब देखकर बहुत आहत थे। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के समय शंकर शाह के नेतृत्व में जबलपुर में क्रांतिकारियों की घटनाएँ बढ़ने लगीं। जबलपुर इन्हें

प्रश्रय देने का गढ़ बन गया था। उस समय जबलपुर में 52वीं रेजीमेंट तैनात थी, जिसके कई सिपाही अंग्रेजों के विरुद्ध थे। लगभग 10 से 12 सिपाहियों ने मिलकर अंग्रेजों को मारने की योजना बनाई। योजना थी कि मोहर्रम के दिन क्रांतिकारी अंग्रेजों पर आक्रमण करेंगे। इसकी भनक अंग्रेज अधिकारियों को लग गई, डिप्टी कमिश्नर ने इस संबंध में और जानकारी जुटाई तथा 13 सितंबर को एक चपरासी को फकीर के भेष में भेजकर स्वयं प्रमाण जुटाने का सफल प्रयास किया। शंकर शाह और रघुनाथ शाह ने फकीर पर विश्वास करके अपनी पूरी योजना फकीर भेष रखे चपरासी को दे दी। 14 सितंबर को डिप्टी कमिश्नर ने ले वर्ल्डविन के साथ 20 घुड़सवार और 40 पैदल सिपाहियों को लेकर गढ़ा पुरवा का घेराव कर दिया और शंकर शाह-रघुनाथ शाह सहित 14 लोगों को बंदी बना लिया।

बाद में अंग्रेजी सरकार ने दोनों को तोप के मुँह में बाँधकर उड़ा दिया। यह स्थान जबलपुर के हाई कोर्ट और रेलवे कार्यालय के पास स्थित है। शंकर शाह की पत्नी रानी फूल कुँवर ने पति-पुत्र के बिखरे शरीर को एकत्रित कर विधि-विधान से उनका अंतिम संस्कार किया और अंग्रेजों से बदला लेने का प्रण भी किया। इन राजवंशियों को उनकी प्रजा के सामने खुले मैदान में तोप के मुँह में बाँधकर उड़ाने के पीछे अंग्रेजों का मूल उद्देश्य आम जनमानस को भयभीत करना था, किंतु इस घटना के पश्चात् गढ़ा मंडला के पूर्व साम्राज्य में (मंडला, दमोह, सिवनी, नरसिंहपुर, रामगढ़ इत्यादि में) सशस्त्र क्रांति फैल गई। जिसमें रानी अवंतीबाई भी सम्मिलित थी। रानी अवंतीबाई ने अंग्रेजों को परास्त करके पुनः मंडला स्वतंत्र करा लिया। धूर्त अंग्रेजों ने अपनी कूटनीतियों से इस आंदोलन को दबा दिया, जिसमें रानी फूलकुँवर, रानी मनकुँवर, रानी अवंतीबाई आदि शहीद हुए स्वतंत्रता संग्राम के इन महान् नायकों को, इन अमर बलिदानियों को इतिहास के स्वर्णिम पन्नों में स्थान नहीं मिला। गोंड राज्यवंश का आदिकाल से भारत के इतिहास में अद्वितीय योगदान रहा। आज भी 'फूट डालो शासन करो नीति' के अंतर्गत वनवासी समाज को हिंदू समाज से तोड़ने के लिए राजनीतिक षड्यंत्र चलाए जा रहे हैं, परंतु 'साँच को आँच कहाँ।' गोंड साम्राज्य की वंश बेल में दी गई राजा-महाराजाओं की नामावली हिंदू देवी-देवताओं से जुड़ी हुई है। स्वयं सम्राज्ञी रानी दुर्गावती का नाम दुर्गा देवी के नाम पर आधारित था। गढ़ा मंडला साम्राज्य का साहित्य सनातन धर्मप्रधान था। यहाँ तक कि गढ़ा में स्थित लघु काशी, पचमठा मंदिर, देवताल में ठाकुरजी की गद्दी, बाजनामठ में स्थित श्री भैरव मंदिर इस बात का प्रमाण है कि गोंड प्राचीनकाल से ही सनातनी हिंदू थे। 1857 की क्रांति में अपना अमूल्य योगदान देनेवाले अमर शहीद राजा शंकर शाह और कुँवर रघुनाथ शाह को हमारा शत-शत नमन!

संदर्भ सूची—

1. डॉ. सुरेश मिश्रा—1857 मध्य प्रदेश के रणबाँकुरे
2. नंदकुमार साए—स्वाधीनता के वीर योद्धा
3. प्रो. दिलीप सिंह—शंकर शाह-रघुनाथ शाह

—डॉ. नुपूर निखिल देशकर
सहायक प्राध्यापक वाणिज्य संकाय
जबलपुर, मध्य प्रदेश
ई-मेल : dr.nupoorn12@gmail.com

□□□

समय का अनजान पथिक

स्मृति शुक्ल

अशोक शाह के सम्पूर्ण साहित्य का मूल्यांकन

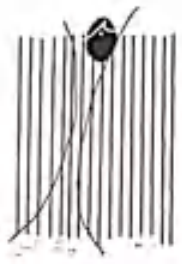

अनामिका प्रकाशन
52 तुलाराम बाग, प्रयागराज

समय का अनजाना पथिक

(अशोक शाह के सम्पूर्ण साहित्य का मूल्यांकन)

स्मृति शुक्ल

अनामिका प्रकाशन

पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक/लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, किसी भी माध्यम से प्रयोग नहीं किया जा सकता।

समय का अनजान पथिक

© स्मृति शुक्ल 2021

प्रकाशक
अनामिका प्रकाशन
52 तुलारामबाग, प्रयागराज-211006
फोन : 9415347186, 9415763049
e-mail : anamikabooks@gmail.com
vinodshukla185@gmail.com

आवरण : मानस क्रियेसंस

मुद्रक
आर्मी प्रिंटिंग प्रेस, लखनऊ

टाईप सेटिंग एवं लेआउट
मानस कम्प्यूटर्स, प्रयागराज

मूल्य : रु0 750.00
प्रथम संस्करण : 2021

ISBN:978-93-90683-16-1

स्मृतिशेष अपने पापा के लिये
जिन्होंने सद्साहित्य पढ़ने के लिये
प्रेरित किया और साहित्यिक
समझ विकसित की।
-स्मृति शुक्ल